International Journal of Advanced Academic Studies 2021; 3(1): 207-209

E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(1): 207-209
Received: 12-11-2020
Accepted: 18-12-2020

युगेश त्रिपाठी
शोध छात्र हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
युगेश त्रिपाठी
शोध छात्र हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

धर्मवीर भारती के प्रबन्ध काव्य में समाज चेतना का अध्ययन

युगेश त्रिपाठी

सारांश
धर्मवीर भारती की प्रबन्ध रचना –'अन्धायुग' एवं 'कनुप्रिया' में समाज चेतना की नयी उद्भावना अनुसंधान की दृष्टि से उपयोगी प्रतीत हुआ है। यही मेरे शोध का प्रयोजन एवं उद्देश्य है। मेरे मन में शोध लेखन की जिज्ञासा नयी कविता के प्रबन्ध काव्यों, समाज चेतना की नयी उद्भावना लेकर बलवती हुई है। इन रचनाकारों के प्रबन्ध काव्यों में समाज चेतना के बदलते स्वरूप के नये परिवेश और प्राचीन धार्मिक मूल्यों के साथ समन्वित रूप से संस्पर्श करने एवं परखने का प्रयास किया गया है। समाज के प्रति नवीनता के आग्रही कवि की वैयक्तिक अनुभूति भी समाज की विशद् परिधि में समाहित होकर सामाजिक भावबोध का स्पर्श करती हुई परिलक्षित होती है जिससे कवि की वैयक्तिकता और सामाजिकता दोनों पहलुओं के प्रति सजगता और जागरुकता का पता चलता है। धर्मवीर भारती ने यह अनुभव किया कि इस ग्रन्थ की स्थितियाँ, मनोवृत्तियाँ सब विकृत हैं। कौरव और पाण्डव दो वंशों में मर्यादा की डोरी उलझ सी गयी है। इस प्रस्तुत प्रबन्ध काव्य में एक मात्र कृष्ण ही ऐसे पात्र हैं जिनमें असीम साहस है और वे समस्याओं को सुलझाने में समर्थ हैं। 'अन्धायुग' के अधिकतर पात्र पथ भ्रष्ट, आत्महारा, विगलित और अन्धे हैं। जबकि धृतराष्ट्र ही जन्मान्ध थे। कवि ने अन्धायुग के अन्तर्गत उन्हें अन्धे की कथा ज्योतिकार चित्रण किया है। समाज चेतना के धरातल पर वे सामाजिक वर्जनाओं और विकृतियों से जूझते दिखाई देते हैं। सामाजिक परिवेश के प्रति उनके दायित्व बोध का अनुमान तो होता है पर ये कवि आत्मिक बोध के स्तर पर आध्यात्मिक मूल्यों की खोज से जुड़े रहे।

मुख्यशब्दः धर्मवीर भारती, प्रबन्ध काव्य, समाज चेतना

प्रस्तावना
प्रयोगवादी काव्य धारा तथोक्ति नयी कविता के वरिष्ठतम रचनाकारों में धर्मवीर भारती का स्थान अन्यतम है। वे बहुआयामी प्रतिभा और विलक्षण अभिव्यक्ति क्षमता के साहित्यकार रहे हैं। भारती जी ने अनेक प्रभावपूर्ण और सशक्त कविताओं का सृजन किया है। 'अन्धायुग' और 'कनुप्रिया' ये दोनों काव्य कृतियाँ हिन्दी काव्य जगत की अमूल्य निधि बन गयी है। अन्धायुग सृजन प्रेरणा एवं कथानक नितान्त मौलिक एवं अनूठी कही जा सकती है। भारती के 'अन्धायुग' में साहित्यकार की अनूठी परिकल्पना, सघन काव्यानुभूति, सुचिन्त दृष्टि, संवेदनशीलता, सांस्कृतिक निष्ठा, परम्परा एवं आधुनिकता, प्रबन्धकीय कालजयी रसवत्ता रचनाकार को महिमामण्डित करती है।
'धर्मवीर भारती' एक सृजनशल अध्येता साहित्यकार थे। उनके साहित्य की सृजन प्रेरणा एक यात्रा के रूप में परिलक्षित होती ही। वह यात्रा एक सांस्कृतिक अभियान होता है। चन्द्रकान्त बान्दिवडेकर के शब्दों में – ''इस सांस्कृतिक पक्ष में राष्ट्रीय अस्मिता, सामाजिक मूल्य बोध एवं समाज सम्पृक्ति, परम्परा के प्रति विवेकपूर्ण लगाव, वैश्वक राजनीति की कूट चालों का मान और राजनीतिक सिद्धान्तों का गहरा ज्ञान, समृद्ध सांस्कृतिक व्यक्तित्व का शुभ और श्रेय के प्रति समर्पित जुड़ाव, नये स्थलों एवं नये लोगों की विशिष्टता, पृथकता एवं नयेपन की अनुभूति से उत्पन्न रसपूर्ण चमत्कृति और इस सबके साथ व्यक्तियों, घटनाओं और प्रकृति के प्रतीतिपूर्ण द्वक–चित्र निर्मित करने की अदम्य सृजनशीलता इत्यादि का गहरा भाव–बोध अन्तर्निहित होता है। धर्मवीर भारती का यह यात्रा–चक्र पढ़ते समय पाठक अनुभव की ऐसी ही प्रगाढ़ उन्मेषशील वृत्तियों में डूबता–उतरता जाता है। यात्रा–चित्र कितने स्तरों पर सृजनशील हो सकता है, इसका एक अपूर्व उदाहरण धर्मवीर भारती की ये यात्राएँ प्रस्तुत करती है।''[1]
उक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि रचनाकार को 'अन्धायुग' के सृजन में कल्पनातीत लोकप्रियता मिली है। भारती ने जिस सृजनात्मक पूर्जा के साथ 'अन्धायुग' की रचना की है उसको पढ़ने से बहुमुखी अध्ययन की व्यापकता, चिन्तन की गहराई, विश्लेषण की नीर–क्षीर विवेकी शक्ति का सन्दर्भ सुखद आश्चर्य की अनुभूति कराता है। चन्द्रकान्त वान्दिवडेकर के शब्दों में – ''उनका कवि सुलभ, भावुक मन, सौन्दर्य के प्रति जितना समर्पणशील है, उतना ही साहसी और चिन्तनशील भी। प्रकृति–सौन्दर्य के आकर्षण ने उन्हें यात्री बनाया और यात्रा ने मुक्त तथा उदार। वे जिस प्रकार सौन्दर्य संवेदन से अभिभूत होते हैं, उसी सहजता से मृत्यु का भी चिन्तन करते हैं।

दोनों ही स्थितियों में उनका भारतीय मानस उदात्त महिमा से मण्डित रहता है। फूलों के विभिन्न प्रकारों, रंगों और आकारों के प्रति स्वभावतः आकृष्ट होने वाले डॉ. भारती कभी आकाश की अथाह नीलिमा में डूब जाते हैं और इसी विराट नीलिमा में उन्हें प्रेम, पवित्रता, उसीम गहनता, अनन्त ऊँचाई, माधुर्य, विराटता भव्यता, असीमता आदि सब कुछ मिल जाता है। जिन्दगी की गहरााई में जीने के सार्थक क्षणों को भारत जी बड़ी सूक्ष्मता से पकड़ते हैं और उन्हें सार्थक अभिव्यक्ति देते हैं। वस्तुतः यह उर्ध्वगामी मानसिकता अध्यात्म की ही एक अनोखी अभिव्यंजना है।''[2]

''भारती ने अपनी जन्मजात भारतीय मानसिकता को संस्कारों से निरन्तर सींचा है और गहन अध्ययन से पुष्ट किया है। उनकी रचनाओं में रामायण, महाभारत, गीता, भागवत, रामचरित मानस, कालिदास, रविन्द्रनाथ आदि के प्रचुर सन्दर्भ उनके गहन अध्ययन और अर्जित ज्ञान की व्यापकता का पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने अपने बहुमुखी अध्ययन को इस प्रकार आत्मसात किया है कि वह उनके व्यक्तित्व का अंग बन गया है। किन्तु विशेष बात यह है कि उन्होंने भारतीय परम्परा की भाँति ही पूरी सजगता एवं निष्ठा के साथ पाश्चात्य परम्परा का अध्ययन और मन्थन किया है। चूँकि भारती की व्यक्तित्व की नींव में जीवन्त भारतीय परम्परा है, इसलिए वे पश्चिमी साहित्यिक कृतियों, विचारधाराओं और अनुभव–परम्पराओं से प्रभावित तो होते हैं, परन्तु अपने विवेकपूर्ण संयम और संतुलन के साथ।''[3]

भारती जी मतवादों से मुक्त एवं वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न स्वतंत्र विचारक थे। समकालीन साहित्य सृजन के प्रति उनका आत्मीय लगाव था। रामायण, महाभारत, वेद, गीता, भागवत, रामचरित मानस, कालिदास एवं रविन्द्रनाथ जैसे ग्रंथों एवं ग्रन्थकारों का उन्होंने गम्भीर चिन्तन किया था। उन पर मार्क्सवाद का प्रभाव था। तथापि मानवीय मूल्यों के प्रति वे उदार, समर्पित एवं निष्ठ रचनाकार थे।

धर्मवीर भारती ने जिस परिवेश पर अपनी लेखनी उठाई उस पर एक नया विचार अनछुआ वस्तु बोध एवं अन–पहचाने मर्म का सहज ही उद्घाटन होता है। उन्होंने अपने साहसिक अभियान से भारतीय लेखकों को गौरवान्वित किया। काव्यानुभव, संस्कृति, सामाजिक जीवन, राजनीतिक वातावरण को अतिक्रान्त करके भारती जी ने 'अन्धायुग' के कथानक को एक नया रूप दिया है। वे एक प्राध्यापक होने के साथ–साथ उच्चकोटि के सम्पादक भी थे। चन्द्रकान्त वान्दिवडेकर के शब्दों में – ''भारती का सम्पूर्ण लेखन ही अनेक प्रकार के विरोधों को समन्वित करके उच्चतर और उदात्त धरातल की ओर गतिशील होने वाला है। विपरीतताओं और विविधताओं के बीच सृजनशील समन्वय भारती जी की सिद्धि है। रोमांटिसिज्म और यथार्थवाद, बौद्धिकता और भावात्मकता, कल्पना और संवेदनशीलता, आवेग और संयम, अनुभूतियों की विस्फोटक अभिव्यक्ति और यथोचित शिल्प–बोध मानवीय जीवन की विद्रुपता और मनुष्य की विवेकशील मूल्यनिष्ठा, मनुष्य की आदिम चेतना और उर्ध्वगामी आत्मिक ऊर्जा, रंग, गंध, रूप के प्रति अनिवार्य आकर्षण और जीवन को कुर्बान करने के साहस जैसी विषमताओं के बीच सृजनशील सम्यक समन्वय भारती जी के साहित्यिक कृतित्व का मर्म है।''[4]

व्यक्ति और समाज में से मूल सत्ता किसकी है कौन पहले है, कौन बाद में – इस पर किसी अन्य कवि ने विचार नहीं व्यक्त किया है किन्तु मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा, प्रभाकर माचवे एवं नेमिचंद्र जैन व्यक्ति और समाज के संबंध में अलग–अलग ढंग से विचार करते हैं। मुक्तिबोध की मान्यता है कि – "आत्मा का सार तत्व प्राकृत रूप से सामाजिक है' इसलिए व्यक्ति और समाज में कोई विरोध नहीं। 'जहां व्यक्ति समाज का विरोध करता दिखाई देता है वहां वस्तुतः समाज के भीतर की ही एक सामाजिक प्रवृत्ति दूसरी सामाजिक प्रवृत्ति से टकराती है, वह समाज का अन्तर्विरोध है न कि व्यक्ति विरुद्ध समाज का या समाज के विरुद्ध व्यक्ति का। व्यक्ति विरुद्ध समाज होता ही नहीं, वह एक 'खाम खयाली' है।"[5] मुक्तिबोध के विचारों से स्पष्ट है कि 'व्यक्ति की आत्मा द्वारा समाज अपने को अभिव्यक्त करता है तथा व्यक्ति और समाज की समस्यायें अलग–अलग नहीं हैं, दोनों एक दूसरे से अभिन्न हैं। व्यक्ति विरुद्ध समाज और समाज विरुद्ध व्यक्ति का विचार उन्हें सही नहीं प्रतीत होता है, उनकी दृष्टि में सामाजिक अन्तर्विरोध ही मुख्य बात है।

धर्मवीर भारती में वैयक्तिक अनुभूति, आदिम गन्ध की तड़प और लोक जीवन की रूमानी छवि की पकड़ है उनके काव्य की अपनी विशिष्ट पहचान, उसकी मूर्तता और पारदर्शिता जो उनके परवर्ती गम्भीर चिंतन–संवलियत काव्यों में लक्षित होती है। कभी कवि वैयक्तिकता को प्रणय संवलित किया है तो कभी राष्ट्र और समाज के पुराने बंधनों और रूढ़ियों से मुक्ति दिलाता हुआ दिखाई पड़ता है।[6]

मुक्तिबोध मानते हैं कि पीड़ित मध्यवर्ग से आये कवि अपना विकल्प 'व्यक्तित्व का विकास' आदि न चुनकर 'सामाजिक प्रगति और मानव मुक्ति' चुनते हैं। उन्हें यह नहीं लगता कि ऐसा करते हुए वे 'मानव व्यक्तित्व का हनन' कर रहे हैं।[7] अज्ञेय व्यक्तित्व पर बल देते हैं। इस बात को लेकर उनकी आलोचना हुई है। कुछ समीक्षकों ने व्यक्तित्व पर बल देने को समाज के लिए खतरा मान लिया है। ऐसे समीक्षकों में रामविलास शर्मा एवं मुक्तिबोध भी शामिल हैं। रामविलास शर्मा को यह ठीक नहीं लगता कि नये कवि सामाजिक प्रश्नों को भूलकर व्यक्तित्व की बात करें। उन्हें लगता है कि नये कवियों ने व्यक्तित्व की तलाश वाली बात भी भाववादियों से ली है। मुक्तिबोध की भी कविता में व्यक्तित्व की तलाश करना उचित नहीं लगता क्योंकि उन्हें यह खतरा दिखलाई पड़ता है कि ऐसा करने से सामाजिक प्रगति और मानव मुक्ति का प्रश्न पीछे छूट जायेगा।

'धर्मवीर भारती' को साहित्य के हर रूप में दिलचस्पी है और हर तरह के रूप वे लिखते हैं उनका कथन है – "असल में भारती का मन कविता में ही रमता है, क्योंकि कविता के माध्यम से ही भारती आज की बेहद पिसती हुई संघर्षपूर्ण, कटु और कीचड़ में बिलबिलाती हुई जिन्दगी के भी सुन्दरतम अर्थ खोज पाने में समर्थ रहा है। कविता ने उसे अत्यधिक पीड़ा के क्षणों में विश्वास और दृढ़ता दी है। कविता भारती के लिए शांति की छाया और विश्वास की आवाज रही है।"[8]

धर्मवीर भारती की कविता में सामाजिक जीवन की सच्ची तस्वीर देखी जा सकती है। 'वक्तव्य' का यह अंश उनके प्रभाव की ओर इंगित करता है – "यों कविता में भारती के पास तूलिका है और वह तारों से रोशनी और फूलों से रंग चुरा कर बात–बात पर चित्र बनाकर चलती है। शायद उनकी कविता शैली पिछले जन्म से मिस्र देश की राजकुमारी रही होगी, जिनकी लिपि का हर अक्षर ही एक–सर्वांग–सम्पूर्ण चित्र होता था, लेकिन भारती को इस बात का ध्यान रहता है कि उसके चित्र आपस में उलझने न पायें और कुल मिलाकर अपनी बात को पूरे प्रभाव के साथ रखें।"[9]

मुक्तिबोध के अनुसार – "अधिकांश लेखक व्यक्ति–स्वातंत्र्य की बात तो करते हैं किन्तु 'जिस मानवीय लक्ष्य आदर्श के लिए' उसे होना चाहिए 'वह अपनी शून्य रिक्तता के धुँए में खो जाता है।[10]' वे लेखक 'व्यक्ति केन्द्रिता' को ही व्यक्ति स्वातंत्र्य मान बैठते हैं।[11]

मुक्तिबोध के अनुसार – 'व्यक्ति स्वातंत्र्य का अर्थ है, प्रत्येक के लिए मानवोचित जीवन का, आत्म–विकास का, सामाजिक विकास का, सामाजिक रूप से, समाज रचनात्मक रूप से स्थायी और शाश्वत प्रबंध।' यदि ऐसा प्रबंध है जिससे कि प्रत्येक को 'अपने बाल बच्चों के जीवन यापन की चिंता न रहे तथा वह अपने को

बेचे नहीं, 'जीवन यापन' के लिए उसे 'तरह–तरह के समझौते न करना पड़े' तो सच्चा व्यक्ति स्वातंत्र्य प्राप्त हो सकता है।[12]

'अन्धायुग' प्रबन्ध काव्य में समाज चेतना –

मुक्तिबोध की दृष्टि में 'किसी भी युग का काव्य अपने परिवेश से या तो द्वन्द्व रूप में स्थित होता है या सामंजस्य रूप में। नयी कविता अधिकतर द्वन्द्व रूप में स्थित होती है।'[13] उनके अनुसार आज का कृतिकार "असाधारण असामान्य युग में जी रहा है। वह एक ऐसे युग में है 'जहाँ मानव सभ्यता संबंधी प्रश्न महत्वपूर्ण हो उठे हैं। समाज भयानक रूप से विषमताग्रस्त हो गया है। चारों ओर नैतिक ह्रास के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। शोषण और उत्पीड़न पहले से बहुत अधिक बढ़ गया है। नोच–खसोट, अवसरवाद, भ्रष्टाचार का बाजार गर्म है। कल के मसीहा आज उत्पीड़क हो उठे हैं–मानव सम्बन्ध टूट–फूट गये हैं।"[14]

मुक्तिबोध की दृष्टि में बदले हुए परिवेश से जो 'परिस्थिति की पेचीदगी' उत्पन्न हुई है उसके कारण आज कवि का मन 'अंतर्मुख होकर निपीड़ित हो उठता है।' आज का कवि न केवल अपनी बाह्य परिस्थितियों और अपनी मनःस्थितियों से परिचित है 'वरन् अपने भीतर वह उस तनाव का अनुभव करता है, जो बाह्यपक्ष और आत्मपक्ष के द्वन्द्व की उपज है।'[15]

धर्मवीर भारती का 'अन्धायुग' आधुनिक प्रबन्धकाव्य है। इस दृश्य काव्य में जिन सामाजिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक समस्याओं को उठाया गया है। उनमें सफल निर्वाह के लिए उन्होंने महाभारत के उत्तरार्ध की घटनाओं का आश्रय ग्रहण किया है। अन्धायुग में समस्त कथा वस्तु पाँच अंकों में विभाजित है। दृश्य परिवर्तन या अंक परिवर्तन के समय लोक नाट्य परम्परा का अनुसरण किया जाना प्रतीत होता है। मूलतः यह काव्य रंग मंच को दृष्टि में रखकर लिखा गया है। इसका रेडियो रूपान्तर भी प्रस्तुत हुआ है। अन्धायुग की स्थापना मंगलाचरण से की गयी है।

'कनुप्रिया प्रबंध काव्य में समाज चेतना –

डॉ. धर्मवीर भारती ने एक प्राचीन कथा प्रतीक का प्रबन्धात्मक विनियोग करते हुए उसे इतिहास और समापन के क्रम में विभाजित कर नये युग की संवेदना से जोड़ दिया है। भारती ने इतिहास, पुराण और समाज चेतना के धरातल पर कनुप्रिया में अपने सृजनात्मक भाव को इतिहासकार या पुराणकार होने से बचाया है। कनुप्रिया में राधा–कृष्ण कथा का पुनर्वाचन भाग नहीं है और न तो प्राचीन राधा भावना का अनुकरणीय अंकन ही है। कवि ने मानवीय प्रसंग में राधा के व्यथा भरे प्रश्नों के गुंजार को ध्वनित किया है। कनुप्रिया की राधा को अपने महत्व का ज्ञान है, यही कारण है कि कनुप्रिया रचना में राधा का नारी रूप गौरव पूर्ण ढंग से प्रत्यक्ष हुआ है। पूर्वराग, मंजरी परिणय, सृष्टि–संकल्प और इतिहास के साथ प्रबन्धकीय समापन में नयी मूल्य भावना का उद्घाटन हुआ है। पूर्वराग के परिपालन में मनोमय गीत दृष्टिगोचर हुए हैं।

कनुप्रिया धर्मवीर भारती के सामाजिक चेतना की एक अन्यतम उपलब्धि है। भारती ने इस प्रबन्ध काव्य में राधा कृष्ण के प्रेम को एक नयी व्याख्या के साथ उपस्थित किया है। श्री कृष्ण नन्दन पीयुष के शब्दों में – ''कृष्ण के स्वरूप की अनन्यता और प्रेम के स्वरूप की विविधता का बड़ा ही सुन्दर वर्णन कवि ने राधा के द्वारा यहाँ व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। 'मंजरी–परिणय' राधा–कृष्ण के प्रेम की अनन्यता का सुन्दर परिचय देता है। पुराने दर्शन को भारती ने नये रूप में संयोजित कर अपनी प्रतिभा का चमत्कार ही दिखाया है।''[16]

कनुप्रिया की राधा का अपूर्व योग ज्ञान हो जो कृष्ण की विराटता के लिए निवेदित है। समापन की मुद्रा में खड़ी राधा में जो शक्ति का समन्वय किया गया है वह राधा का ऐसा स्वरूप है। कनुप्रिया की राधा का सबसे बड़ा योगदान समाज की आन्तरिकता और उसकी रागात्मकता है। महेन्द्र कार्तिकेय के शब्दों में – ''नव बुद्धिवादी नयी कवितावादी राग को लिजलिजी भावुकता मानते हैं, ऐसी स्थिति में धर्मवीर भारती ने भारतीय सन्दर्भ के उदात्त चरित्र केन्द्र में रागात्मकता की प्रतीक राधा के माध्यम से समाज और ब्रम्हाण्ड की आन्तरिकता को रेखांकित किया है। समाज का अस्तित्व ही रागात्मकता पर आधारित है। राग का ही एक अंग चिन्तन या विचार है। यदि बौद्धिकता को अतिरिक्त महत्व दिया जाएगा तो समाज का स्वरूप धुँधला हो सकता है।''[17]

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः मैं कह सकता हूँ कि कनुप्रिया में कथात्मक चित्रण रागात्मकता, मानवता एवं सामाजिकता के लिए निर्विवाद अनिवार्यता है। डॉ. आशा जुलका ने स्वीकार किया है कि – ''कनुप्रिया'' में राधा और कृष्ण के तन्मयता में बीते क्षणों को व्यक्त करना कवि का उद्देश्य है, क्योंकि यह सब बाहर का उद्वेग है, महत्व उसका नहीं है।..... महत्व उसका है जो हमारे अन्तर में साक्षात्कृत होता है ..... चरम तन्मयता का क्षण।[18]

कुल मिलाकर यह कहना उचित लगता है कि कनुप्रिया का केन्द्रित बोध समाज चेतना के रूप में अन्तर्निहित है। कनुप्रिया की राधा के विचार का संसार पूर्ण ब्रह्माण्ड है और इसके बावजूद वह एक ऐसी सामान्य नारी है जो अपने प्रिय के प्रति पूर्ण समर्पण भावना का उद्बोध करती है। निःसन्देह कनुप्रिया एक एंसा प्रबन्ध काव्य है जो सम्पूर्ण सामाजिक चेतना के माध्यम से मानवता को अभिभूत करने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. धर्मवीर भारतीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृष्ठ 194, चन्द्रकान्त वान्दिवडेकर, प्रथम संस्करण, 2001 ई.
2. वही, पृष्ठ 8.
3. धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृष्ठ 8, चन्द्रकान्त वान्दिवडेकर, प्रथम संस्करण, 2001 ई.
4. धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृष्ठ 10, चन्द्रकान्त वान्दिवडेकर, प्रथम संस्करण, 2001 ई.
5. नयी कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबंध, पृष्ठ 58, मुक्तिबोध.
6. दूसरा सप्तक : 'गुनाह का गीत' कविता से उद्धृत, पृष्ठ 165, पेपरबैक सं, 1999.
7. नयी कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबंध, पृष्ठ 59, मुक्तिबोध.
8. दूसरा सप्तक, पृष्ठ 158–159, धर्मबीर भारती, सम्पादक अज्ञेय.
9. दूसरा सप्तक, पृष्ठ 159, धर्मबीर भारती, सम्पादक अज्ञेय.
10. नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध, पृष्ठ 32, मुक्तिबोध.
11. वही, पृष्ठ 181.
12. वही, पृष्ठ 180, मुक्तिबोध.
13. नयी कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबंध, पृष्ठ 12, मुक्तिबोध.
14. वही, पृष्ठ 14.
15. नयी कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबंध, पृष्ठ 2, 12, मुक्तिबोध.
16. धर्मवीर भारती की साहित्य साधना, पृष्ठ 392, सम्पादक पुष्पा भारती.
17. धर्मवीर भारती की साहित्य साधना–आधुनिक काव्य की विशिष्ट उपलब्धि : कनुप्रिया, पृष्ठ 397, महेन्द्र कार्तिकेय.
18. वही, पृष्ठ 400.